

जिला जेल झाबुआ में अल्पविराम का कार्यक्रम रखा गया



नीलिमा डाबी झाबुआ (विध्यसत्ता)।

जिला जेल में आत्महत्या निषेध दिवस के उपलक्ष में जिला नोडल अधिकारी श्री जगदीश सिसोदिया मास्टर ट्रेनर श्रीमती स्नेह गीते श्रीमती कमला पलिया एवं श्री नाथूलाल मुनिया द्वारा कैदियों को आत्महत्या किन परिस्थितियों में लोग करते हैं विषय पर विस्तार से चर्चा की गई। जिंदगी में निराशा कैसे आ जाती है मन में कौन-कौन से विकार आ जाने से हम निराश हो जाते हैं। जिंदा रहना और जीना के अंतर को स्पष्ट किया गया। अल्पविराम का कार्यक्रम रखा गया। जिला जेल अधीक्षक श्री विश्वकर्मा साहब भी पूरे समय कार्यक्रम में उपस्थित रहे। श्री सिसोदिया ने अवगत कराया की जिन परिस्थितियों में हम लोग जी रहे हैं उसमें तनाव टुटन घुटन बढ़ गई है लोग संबंध पूर्वक जीना भूल गए हैं। यही मूल कारण है कि वह तनाव में आकर आत्महत्या कर लेते हैं। देखा गया है कि ज्यादा धन

दौलत संग्रहण करने वाले लोग ज्यादा आत्महत्या कर रहे हैं। वर्तमान में संबंध पूर्वक जीने में सबसे बड़ी बाधा सुविधाओं को ज्यादा महत्व देने से आ रही है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए, शरीर को सुंदर दिखने के लिए, काफी सारे प्रयास किया जा रहे हैं। लेकिन मानसिक स्वच्छता पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। मानवीय मूल्य की चर्चा करते हुए श्री सिसोदिया

ने बताया कि हमारे अंदर जो स्थापित मूल्य है। आधार मूल्य विश्वास से लेकर पूर्ण मूल्य प्रेम तक पर विस्तार से चर्चा की गई। मास्टर ट्रेनर स्नेहा गीते ने एक सामान्य से पेन के वजन को हम कितनी देर सहन कर सकते हैं। फिर हमारे मस्तिष्क में इतने सारा बोझ उठकर क्यों चलाते हैं? उदाहरण के माध्यम से तनाव मुक्त रहने पर जोर दिया गया। श्री मती कमला पलिया मैडम ने मानव के मूल्यों को एक कहानी के माध्यम से समझाया। हमें वस्तुओं के मूल्य तो पता है, लेकिन मानव के मूल्य पता नहीं है। श्री मुनिया जी ने ईश्वर की कृपा पर एक अच्छी कहानी सुनाई और बताएं कि जो सहज सरल व्यक्ति होते हैं, उनका ईश्वर भी ध्यान रखना है। सहजता, सरलता से जीना अगर आ गया उससे बड़ी कोई उपलब्धि नहीं हो सकती। अंत में जेल अधीक्षक महोदय श्री विश्वकर्मा साहब ने बताया कि हमें सारे नियमों का पालन करते हुए व्यवस्थित रूप से जीना होगा। तभी तनाव मुक्त रह पाएंगे।